POEM-14 (अग्निपथ)

पाठ-परिचय

इस कविता में कवि ने मनुष्य के जीवन पथ को अग्नि से भरे पथ की संज्ञा देते हुए जीवन की कठिनाइयों से विचलित न होने की प्रेरणा दी है। जीवन की विभिन्न बाधाओं, संघर्षों तथा विसंगतियों को पार करते हुए निरंतर आगे बढ़ते जाना ही मानव का धर्म है। कवि ने मनुष्य को समझाते हुए कहा है कि जीवन की विभिन्न समस्याओं से घबराना नहीं चाहिए। बल्कि उनका सामना करते हुए जीवन पथ पर अग्रसर रहना चाहिए। अपनी मंज़िल की ओर बढ़ते समय मनुष्य को थककर बैठ नहीं जाना चाहिए। उसे कभी भी अपने बढ़ते कदमों को रोकना नहीं चाहिए तथा विषम परिस्थितियों से भयभीत होकर वापस नहीं मुड़ना चाहिए। मानव की कर्मठता की पहचान यही है कि वह हर परिस्थिति में बिना विचलित हुए अपने मार्ग पर अग्रसर रहे। कुल मिलाकर यह कविता कवि के संघर्षमय जीवन का ही आईना है।

अग्नि पथ
(हरिवंशराय 'बच्चन')

- इस उद्‌बोधात्मक कविता में कवि ने मनुष्य के माध्यम से स्वयं को ही संबोधित किया है।
- इस संघर्षमय जीवन की राह को 'अग्निपथ' की संज्ञा दी है।
- दहकते जीवन पथ पर छाया की इच्छा किए बिना अनवरत गतिशील रहते हुए आगे बढ़ना चाहिए।
- कवि कभी भी थकने, थमने तथा वापस नहीं मुड़ने की शपथ लेते हैं। कर्मठता ही श्रेष्ठ मानव धर्म है।
- कवि ने आँसुओं, पसीने तथा रक्त में लथपथ निरंतर आगे बढ़ते रहने के दृश्य को महान कहा है।
- कवि ने मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति में जीवन पर निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी है।

Scanned with CamScanner

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

प्रश्न-अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) कवि ने 'अग्नि पथ' किसके प्रतीक स्वरूप प्रयोग किया है?

उत्तर कवि ने 'अग्नि पथ' जैसे बिंबात्मक शब्द का प्रयोग जीवन के संघर्षपूर्ण, अति जटिल परिस्थितियों से घिरे हुए वातावरण के लिए किया है। 'दहन' का विशेष गुण लिए हुए अग्नि जैसी परिस्थितियाँ व्यक्ति को तिल-तिल करके जलने के लिए विवश कर देती है। ऐसे सुलगते रास्तों पर, अंगारों पर पैर रखते हुए भी व्यक्ति को अपना जीवन बसर करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में किसी से राहत मिलने की कल्पना भी नहीं करनी चाहिए।

(ख) 'माँग मत', 'कर शपथ', 'लथपथ' इन शब्दों का बार-बार प्रयोग कर कवि क्या कहना चाहता है?

उत्तर तीन अनुच्छेदों में तीन निर्णयात्मक शब्दों का पूरे आत्मविश्वास के साथ बार-बार प्रयोग करते हुए कवि यह कहना चाहते हैं कि जीवन की परिस्थितियाँ कितनी भी जटिल क्यों न हों, सहायता करने वाले भी सहर्ष सहायता करने को तैयार खड़े हों परंतु कभी मुड़कर पीछे न देखते हुए, निरंतर कर्म का अवलंबन लेते हुए किसी से कुछ नहीं माँगना चाहिए। कवि सहानुभूति

Scanned with CamScanner

के पीछे छिपी मानव मन की स्वार्थी भावना को उकेरना चाहते हैं। इन तीनों शब्दों का बारंबार प्रयोग कवि के संकल्प को क्रमशः और भी दृढ़ बनाता है।

(ग) 'एक पत्र छाँह भी माँग मत' इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर इस भावपूर्ण, अंतरात्मा को उद्वेलित करने वाली पंक्ति के द्वारा कवि यह कहना चाहते हैं कि परिस्थितियों के विकराल होने पर, जीवन में दुःख के झंझावत उठने पर, पीड़ा से मुक्ति का एक मार्ग भी दिखाई न देने पर तथा निराशा, हताशा, वेदना की छटपटाहट के अधिक बढ़ जाने पर भी किसी छायादार वृक्ष की एक पत्ती के समान छाया अर्थात सहारे की इच्छा नहीं करनी चाहिए। कवि का अभिप्राय यह है कि तनिक से सुख और सहयोग से दर्द की टीस कम नहीं होती है बल्कि और बढ़ जाती है।

2. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए–

(क) तू न थमेगा कभी
तू न मुड़ेगा कभी

उत्तर हालावादी कवि हरिवंशराय 'बच्चन' विरचित 'अग्निपथ' कविता से उद्धृत ये पंक्तियाँ जीवन से थके हारे इंसान को जीवन पथ से विचलित न होने की प्रेरणा दे रहीं हैं। कवि आत्मकथनात्मक शैली में रचित इस पंक्ति के द्वारा यह कहना चाहते हैं कि जीवन की कठिनाइयाँ कितनी भी बढ़ती जाएँ, उलझनें विकराल सर्प की भाँति जीवन को समेटने लगें, फिर भी कभी जीवन पथ पर चलने वाले पथिक को रुकना या पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिए। बीता समय साथ नहीं देता, रुककर कुछ हासिल नहीं होता, इसलिए व्यक्ति को प्रतिपल संघर्षों का सामना करते हुए अपने मार्ग पर अग्रसर रहना चाहिए।

(ख) चल रहा मनुष्य है
अश्रु-स्वेद-रक्त से लथपथ, लथपथ, लथपथ

उत्तर खड़ी बोली हिंदी को वास्तविकता के धरातल से जोड़ने वाले कवि हरिवंशराय 'बच्चन' द्वारा रचित 'अग्निपथ' कविता से उद्धृत इन पंक्तियों में कवि ने उस महान दृश्य की कल्पना की है, जहाँ सदियों से लोग कष्ट, पीड़ा (उत्पीड़न) निराशा, हताशा एवं जीवन की अनगिनत परेशानियों को झेलते हुए भी पसीना बहाते हुए, आँसू बहाते हुए, खून से लथपथ होकर भी निरंतर जीवन पथ पर आगे बढ़ रहे हैं। कवि यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि जीवन किसी के लिए भी सुखद, सरल या फूलों की सेज नहीं है। सभी को जीवन की कठिनाइयाँ झेलनी ही पड़ती हैं। श्रम के अभाव में जीवन सुखी और सम्पन्न नहीं बनता है। कर्म में पूरी तरह डूबकर तथा लथपथ होकर ही सुख का आनंद रूपी मोती प्राप्त होता है।

3. इस कविता का मूलभाव क्या है? स्पष्ट कीजिए–

अथवा

'अग्नि पथ' कविता का केंद्रीय भाव क्या है? **[CBSE 2011]**

उत्तर 'अग्निपथ' कविता में कवि ने स्पष्ट किया है कि परेशानियों से भरा मानव का जीवन अंगारों भरे रास्ते के समान है जिसकी लपटें निरंतर उसे झुलसाती रहती हैं। जीवन की विभिन्न समस्याओं से जूझना तथा अपने पथ पर निरंतर बढ़ते रहना ही मानव धर्म है। इसलिए व्यक्ति को कभी किसी सहयोगी से भी एक पत्ते के समान छाया अर्थात् सुख की कामना नहीं करनी चाहिए। उसे कभी पीछे मुड़कर भी नहीं देखना चाहिए क्योंकि अतीत की सुनहरी यादें जीवन को और दूभर बना देती हैं। उसे एकमात्र कर्म का आश्रय लेकर जीवन की बाधाओं, विपदाओं को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए।

Scanned with CamScanner